गुरु नानक – सबद ३३

आसण लोइ लोइ भंडार ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

आसण लोइ लोइ भंडार ॥
जो किछ पाइआ सु एका वार ॥
कर कर वेखै सिरजणहार ॥
नानक सचे की साची कार ॥
आदेस तिसै आदेस ॥
आदि अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥३१॥

सार: प्रकृति मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन जब वह इसे एक उपयोगी स्रोत के रूप में देखता है तब वह इसके साथ अपना संबंध खो भी सकता है। यदि मनुष्य इस तथ्य को स्वीकार कर लेता है कि प्रकृति एक पोषण करने वाली इकाई है जिसका प्रत्येक तत्व एक दूसरे पर निर्भर करता है, तब इस अनुभव की पूरी स्थिति से सद्भाव बढ़ता है। यह अंतरर्दृष्टि उन्हें सृजन के स्रोत पर वापस ले जाती है।

आसण लोइ लोइ भंडार ॥
प्रकृति उस सर्वव्यापी शक्ति का अदभुत अभिव्यक्ति का खज़ाना है जो सृष्टि के हर पहलू में व्याप्त है और उसे नियंत्रित करती है।

जो किछ पाइआ सु एका वार ॥
एक सर्वव्यापी चेतना, जिसने दुनिया की रचना को बनाने में जीवन का बीज डाला है, निरंतर विकसित हो रही है।

कर कर वेखै सिरजणहार ॥
सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता, सृष्टि को बना कर उसके अस्तित्व को बनाये रखता है।

नानक सचे की साची कार ॥

नानक कहते हैं कि सच्चे रचयिता की रचना ही सच्ची है।

आदेस तिसै आदेस ॥

प्रकृति के हुकुम का सम्मान करना सार्वभौमिक नियम है।

आदि अनील अनाद अनाहत जुग जुग एको वेस ॥३१॥

अनादि काल, से स्रोत, दोषरहित, अनंत, सर्वव्यापी अदृश्य ऊर्जा एक ही मौलिक इकाई रही है। (३१)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि एक सार्वभौमिक कानून के रूप में प्रकृति का सम्मान करना हमारा अंतर्निहित, बिना शर्त दायित्व है जो सार्वभौमिक परोपकार को बढ़ावा देता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com